महामति कहे ए साथ जी, ए दीप की बीतक ।
अजूं और बहुत है, सो कहों ग्रहे माफक ॥४१॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे साथ जी ! यह जयराम कंसारा जो दीप बन्दर में रहते थे उनके घर की बीतक है । अभी दीप बन्दर की और बीतक शेष है जो अब कहता हूं ।

(प्रकरण २०, चौपाई ११८)

फेर कहे सुकन जयराम को, दीप में श्रीजीयें जब ।
रास लीला याद करते, पहिले कह्या सनमन्ध को सबब ॥१॥

अब आप श्री जी जब जयराम भाई के घर दीप बन्दर में थे तो उन्होंने रास की लीला की याद कराते हुए बताया कि हमारा सम्बन्ध श्री राजजी से था परन्तु रास में अक्षर की आतम तथा जोश धनी धाम का था । उनके साथ लीला करते हुए यह भूल गए थे कि हमारा घर परमधाम है इसलिए श्री राजजी महाराज अन्तर्ध्यान हो गए तथा विरहा देकर हमें मूल स्वरूप की याद दिलाई ।

फेर तुमही प्रगटे क्योंकर, क्योंकर भाना सोक ।
फेर राज सों मिलके, करने लगे जोक ॥२॥

फिर श्री राजजी ने अपने निज स्वरूप तथा निज श्रृँगार से आकर हमारे विरह को दूर किया तथा एक-एक गोपी और एक-एक कान्हा के रूप में होकर हमें अपार सुख दिए फिर खूब हांस-विनोद के साथ लीला की ।

क्यों कर जमुना त्रट, लगे थे करन झीलन ।
क्यों कर सिनगार करके, याद करी बातें मोमिन ॥३॥

इसके बाद यमुना तट पर किस तरह से जाकर झीलना किया तथा कैसे सबने नया श्रृंगार किया था, उन बातों को याद करो ।

क्योंकर तुम आसन किया, तापर बैठे श्री राज ।
क्यों घेर बैठे श्री राज को, अरूगावन के काज ॥४॥

झीलना करने के बाद उतारे हुए वस्त्रों का आसन बनाकर उस पर कैसे श्री राज को बिठाया था तथा हम सब सखियां अरूगावने के वास्ते किस तरह श्री राज जी को घेर कर बैठी थी ।

Nijanand App

फेर झीलना करके, बैठे आरोगन जब ।
बिरहा ताप याद आइया, इत स्वाल किये हैं तब ॥५॥

फिर श्री यमुना जी में झीलना करके जब आरोगाने के लिए बैठी तो श्री राज जी ने पूछा कि वृन्दावन कैसा लगा ? तब वृन्दावन की महिमा गाते समय विरह की वेदना की याद आई तथा धनी से मांगा कि यह वृन्दावन और यह स्वरूप हमें सुहाता नही है । हमें वहां ले चलिए जहां हम सब कभी भी आपसे जुदा न हों ।

बातें क्योंकर तुम करी, बैठे हिरदे विरह बचन ।
क्यों पूछे प्रस्न श्री राज सों, क्यों उत्तर दिया रोसन ॥६॥

श्री राजजी महाराज के द्वारा वृन्दावन की महिमा पूछने पर कैसी शोभा का वर्णन किया था और फिर विरह की पीड़ा कैसे हृदय में जागृत हुई थी ? कैसे श्री राज जी ने और प्रश्न पूछे और किस तरह से तुमने उत्तर दिया था । उत्तर देते हुए यह कहा था कि हमें उस घर में ले चलों । जहां हम आपसे जुदा न हो।

भई क्यों आज्ञा धाम चलने, क्यों रहे मनोरथ तुम ।
क्योंकर भाग्या सुपना, तुम पर हुआ हुकम ॥७॥

कैसे श्री राजजी महाराज आज्ञा देकर हमें घर ले आए । परमधाम पहुंचने पर हमारा सपना कैसे टूटा। घर पहुंचने पर भी हमारे मनोरथ खेल देखने के प्रति बाकी रह गए थे तब फिर हमारी इच्छा पूरी करने के लिए खेल में भेजने का हुकम हुआ ।

फेर इत सुपन भागा, जब मोमिन पहुंचे धाम ।
चाह रही खेल देखने, होय पूरे न मनोरथ काम ॥८॥

किस तरह से हम रास से परमधाम पंहुचे थे ? परमधाम पंहुचने पर कैसे हमारा सपना टूटा था तथा हमें माया का खेल बहुत सुहावना-रलियामणा लगा था । मनोरथ पूरे नही हुए थे इसलिए खेल देखने की चाह बाकी रह गई थी ।

अजूं मनोरथ रह गये, क्यों कहेगी रूहें विख्यात ।
क्योंकर राजें दिखाइया, तुम्हारे दिल की बात ॥९॥

माया की चाहना बाकी रह जाने के कारण से श्री राजजी महाराज ने हमारे मन की बाकी चाहना पूरी करने के लिए तीसरी बार यह कैसे ब्रह्माण्ड बनाया । पूरी माया देखने के बाद ही रूहें माया के दुःख की हकीकत आकर कहेंगी ।

Nijanand App

तिस वास्ते इण्ड तीसरा, रचिया तुम कारन ।
त्रैगुन खिलौने तुम्हारे, तुम हो खास सैंयन ॥१०॥

इसलिए यह तीसरा कालमाया का ब्रह्माण्ड तुम्हारे वास्ते ही बनाया गया है । इसमें त्रैगुण तुम्हारे वास्ते ही खेल को सुन्दर ढंग से बना रहे हैं और मन को लुभाने वाले नए-नए दृश्य दिखा रहे हैं कि तुम माया में भूल जाओ । यह तुम्हारे सामने खिलौनों के समान हैं क्यों कि तुम परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हो ।

फेर खेल क्योंकर किया, याद करो ताए तुम ।
क्यों रमाये तुमको दे, तुम्हारे साथ अपना हुकम ॥११॥

यह तीसरा ब्रह्माण्ड क्यों बना है ? हे जयराम भाई ! इसे याद करो कि फिर श्री राजजी महाराज ने तुमको खेल दिखाने के लिए अपने हुकम के स्वरूप को भेजा ।

अजूं तुम मोह अंधेर में, जो एता दिया तुम्हें याद ।
फेर फेर माया मोह में, याद न करो बुनियाद ॥१२॥

तुम्हें परमधाम की, खेल मांगने की, ब्रज और रास की आनन्दमई लीलाओं, निजघर के सुखों की, श्री राजजी महाराज की अखण्ड निसबत की याद दिलाने पर भी तुम्हें अपने निजघर की याद नही आती है ।

इन चरचा के रस में, देखा न जाते दिन ।
सुनके सब मगन भये, दिल हुआ अति रोसन ॥१३॥

ऐसी आनन्दमयी चर्चा को सुनते सुनते समय का कुछ भी पता नही रहा । सारा दिन व्यतीत हो गया। वहां बैठे सारे सुन्दरसाथ ने मग्न होकर चर्चा सुनी जिससे निजघर की याद से उनकी आतम जागृत हो गई ।

फेर चरचा करने लगे, भलो जो पायो सुख ।
ता समें साथ की सिफत, कही न जाय या मुख ॥१४॥

फिर आप श्री जी अपने मुखारबिन्द से चर्चा करने लगे जिससे सुन्दरसाथ को बहुत ही सुख मिला । उन सुन्दरसाथ की सिफत किस मुख से कही जाए जिन्होंने उस वक्त साक्षात् श्री जी के मुखारबिन्द से चर्चा सुनी ।

सम्वत सत्रह सै बाइसे, दीप पधारे श्री राज ।
दोए बरस तहां रहे, सब पूरे मनोरथ काज ॥१५॥

संवत् १७२२ से लेकर १७२४ तक आप श्री जी दो वर्ष दीप बन्दर में रहे । वहां की सब सुन्दरसाथ की आतम जागृत हुई तथा सबकी मनोकामना भी पूर्ण हुई ।

Nijanand App

नित चरचा इन भांत की, होवे दीप बन्दर में ।
बड़ा सोर पड़ा सहर में, आवत सब सुनने ॥१६॥

इस प्रकार की अखण्ड एवं अलौकिक ज्ञान की चर्चा जो आज दिन तक न तो किसी ने कही थी और न सुनी थी । इस चौदह लोक के ब्रह्मांड से आगे उस अखण्ड गोलोक की नित्य वृन्दावन की रास लीला का वर्णन और उससे भी आगे अखण्ड परमधाम तथा वहां की लीलाओं को वर्णन करने वाली इस महत्वपूर्ण चर्चा की महिमा दीपबन्दर में चारों ओर फैल गई जिससे सब लोग मिथ्या जगत के अपने पुराने गुरूओं को छोड़ कर श्री जी के चरणों में आने लगे ।

अपने अंकूर माफक, हिस्सा लिया सबन ।
पर आये केतेक साथ में, जो निसबती साथ सैंयन ॥१७॥

दीपबन्दर की बहुत सारी जनता ने श्री जी का यह अलौकिक ज्ञान सुना । अपने अंकूर माफक सबने सुख लिया । उनमें जो अपनी ब्रह्मसृष्टि थी, उसने धनी से अपनी निसबत को पहचान कर तारतम लिया और साथ में शामिल हुई ।

जुध किया दज्जाल नें, बड़ा जो किया सोर ।
हाथ पांव अपने पटके, पर कछु न चला जोर ॥१८॥

वहां के पुराने गुरूजनों ने भी जब ऐसी चर्चा की महिमा सुनी पर उनका केवल पेट के वास्ते चर्चा सुनाने का धन्धा होने के कारण से श्री जी की चर्चा उन्हें अच्छी नही लगी और शहर में उन्होंने विरोध तो बहुत किया परन्तु उनका वश नहीं चला ।

धक्का दिया बड़ा साथ को, पर जाको डग्या न ईमान ।
सोई खास गिरोह मोमिन, जाको हकें दई पूरी पहिचान ॥१९॥

इस समय प्रबल माया ने सुन्दरसाथ का ईमान गिराने के वास्ते झूठा बंवडर खड़ा कर दिया जिससे माया की लोक लाज से घबराने वालों का ईमान गिर गया परन्तु जिन सुन्दरसाथ को अपने श्री राज जी महाराज के साथ निसबत की पूरी पहचान हो गई थी वे अपने ईमान पर डट कर खड़े रहे ।

अब कहों साथ आवन की, पहिले आये जीवा और जयराम ।
रतनबाई घर में रहे, किया माया मिनें आराम ॥२०॥

अब जो सुन्दरसाथ दीपबन्दर में माया में आकर भूल गये थे श्री जी के वहां जाने से चर्चा सुनकर श्री राजजी महाराज के साथ अपनी निसबत की पहचान करके सुन्दरसाथ में शामिल हुए । अब उनके नाम कहता हूं । सबसे पहले जयराम भाई तथा उनके भाई जीवा भाई ने सुन्दरसाथ में शामिल होकर अखण्ड सुख लिया । जयराम भाई की धर्म पत्नी माया में फंसी रही ।

Nijanand App

चरचा सुनके आइया, रहे गणेस इन घर मिने ।
यह आया साथ में, सुन राज की चरचा से ॥२१॥

गणेश भाई जो जयराम भाई के परिवार का सदस्य थे । उन्होंने भी चर्चा सुनकर तारतम लिया ।

गंगादास आइया, इन चरचा के संग ।
आय बैठा साथ में, कर कलजुग से जंग ॥२२॥

गंगादास भी चर्चा सुनकर अपने सांसारिक कुटुम्ब कबीले की लोक लाज को छोड़ कर सुन्दरसाथ में शामिल हुए।

नरसिंह दास ग्वाल जी, ए आय बैठे बीच निजधाम ।
जंग भया दज्जाल सों, ए डगा नहीं इन काम ॥२३॥

नरसिंह दास ग्वाल जी ने श्री राज जी की पहचान करके तारतम लिया तथा माया का बवडंर आने पर भी ईमान से वे नही गिरे ।

गरीबदास साथ में, था पहिले का भोज भाई ।
आवत नित राज पास, ए चरचा श्रवन देने को सुखदाई ॥२४॥

एक साथी गरीबदास, जिनका नाम पहले भोजभाई था स्वामी जी के चरणों में चर्चा का सुख लेने के लिये साथ में शामिल हुए ।

इत सरूप दे आई साथ में, वीरबाई और तेज ।
और तेज बाई गेहेलबाई, इनों का सेवा में बड़ा हेज ॥२५॥

श्री राजजी की चर्चा सुन कर कुछ बहनों ने भी तारतम लिया जिनके नाम इस प्रकार है- वीरबाई, तेजबाई, एक और तेजबाई, गेहेलबाई थी । इनको श्री जी की सेवा करके ही तृप्ति होती थी ।

चम्पा और सुहासन, बेलबाई और बाल ।
ए आई चारों साथ में, हुये राज अति खुसाल ॥२६॥

चम्पा बाई, सुहासन बहन, बेल बाई और बालबाई इन चारों ने मिल कर तारतम लिया तथा वे सुन्दरसाथ में शामिल हुई । श्री जी उनके प्रेम से बहुत खुश हुए ।

यों साथी साथ में, भये संगी चरचा के ।
पचास साठ आये साथ में, आहार चरचा देवें ए ॥२७॥

इस प्रकार दीप बन्दर में ५०-६० सुन्दरसाथ की आत्मा जागृत हुई । वे तारतम लेकर श्री निजानन्द सम्प्रदाय में आये तथा नित्य आकर चर्चा सुनते थे ।

Nijanand App

बड़ो विलास जो होवहीं, सो क्योंकर कहों इन मुख ।
लाहा लियो साथ में, सो कहूयो न जाए या सुख ॥२८॥

उस समय के सुन्दरसाथ ने सेवा करके जो सुख और आनन्द लिया उसका इस मुख से वर्णन नही किया जा सकता है ।

बड़ा सोर हुआ साथ में, कांप्या कुली दज्जाल ।
ए आये मेरे दुस्मन, मोकों करे बेहाल ॥२९॥

इस प्रकार लोगों का श्री जी की चर्चा पर विश्वास देखकर वहां के पहले वाले गुरूजनों के अन्दर बेईमानी बैठ गई । उन्होंने यह समझा कि श्री जी हमारे दुश्मन हैं । इनके यहां रहने से हमारी कोई भी मान्यता नही रहेगी, जिससे हमारी आमदनी कम होने से हमारी सांसारिक दशा खराब हो जायेगी ।

महामति कहे ए साथ जी, ए बीतक दीप बन्दर ।
लड़ाई दज्जाल सों, पहुंचाई सख्ती मोमिनों पर ॥३०॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि यह दीपबन्दर की बीतक है । फिर उन गादी पति गुरूजनों ने दिल में बेईमानी आ जाने से फिरंगी बादशाह से मिलकर मोमिनों पर कैसे संकट ढाये उसकी अब बीतक कहता हूं ।

(प्रकरण २१, चौपाई ९४८)

फेर कहों दीप बन्दर की, जो लड़ाई दज्जाल बीतक ।
तो मेहर में राखे मोमिन, करी सुभानल हक ॥१॥

दीप बन्दर के उन गादी पतियों के द्वारा सुन्दर साथ पर किस तरह से मुसीबत आई परन्तु श्री राज जी महाराज ने मेहर कर मोमिनों को किस प्रकार चरणों में रखा तथा सकंट नही आने दिया ।

कथा बांचने के आसन, सो हुये दुसमन ।
श्रोता जो थे उनके, सो आय देने लगे श्रवण ॥२॥

दीपबन्दर के जितने भी कथा सुनाने वाले पंडित एवं आचार्य थे वे श्री जी के दुश्मन हो गए क्यों कि उनकी कथा को सुन कर भेंट चढ़ाने वाले श्री जी के चरणों में चर्चा सुनने आते थे ।

सवाल पूछे जाए तिनको, हमको देओ जवाब ।
इनको अर्थ आवे नही, रख न सके ताव ॥३॥

उन्हीं आचार्यो के शिष्य जब स्वामी जी से अखंड गोलोक तथा वृन्दावन की चर्चा सुनकर इसके विषय में उन आचार्यों से प्रश्न पूछते थे तो वे महानुभाव अपने शिष्यों के प्रश्नों का उत्तर भी नही दे सकते थे। उनके प्रश्नों के उत्तर देने की योग्यता उनमें नही थी ।

Nijanand App